जापान तथा द्वितीय विश्व युद्ध

द्वितीय विश्वयुद्ध सितम्बर, 1939 ई० में छिड़ गया। इस युद्ध में एक ओर जर्मनी तथा इटली के तानाशाह देश थे और दूसरी ओर इंगलैण्ड, अमेरिका और फ्रांस के पूंजीवादी देश। जापान, इटली और जर्मनी (धुरी-राष्ट्र) संगठित होकर प्रजातंत्रीय शक्तियों का सामना करना चाहते थे। इटली के अधिनायक मुसोलिनी के अनुसार "दो संसारों के बीच इस संबंध में कोई समझौता नहीं हो सकता, या तो हम रहेंगे या वे।"

अमेरिका को आरंभ में आशा थी कि इंगलैण्ड इस युद्ध में पराजित होकर शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर देगा परंतु ब्रिटिश सेना ने ओरेन के युद्ध में जर्मनी के सभी जंगी जहाजों को नष्ट कर दिया। अब अमेरिका ने इंगलैण्ड की वीरता देखकर यह सोचा कि यदि इंगलैण्ड की सहायता की जाए तो इंगलैण्ड की रक्षा होगी और अमेरिका भी सुरक्षित रहेगा। अतः अप्रैल, 1940 ई० अमेरिका ने मित्र राष्ट्रों को सहायता देना प्रारंभ कर दिया तथा मार्च, 1941 ई० से अमेरिका ने मित्र-राष्ट्रों को समुद्री जहाज, वायुयान टैंक, मशीनें आदि देना शुरू किया। इस प्रकार अमेरिका प्रत्यक्ष रूप से युद्ध में उतर गया। इसके फलस्वरूप जर्मनी की शक्ति शिथिल पड़ गई।

जापान का युद्ध में प्रवेश:- इस समय जापान चीन में अपना साम्राज्य विस्तार कर रहा था। जर्मनी के युद्ध छेड़ देने पर जापान ने प्रशांत महासागर में अमेरिकी प्रदेशों को जीतने की ओर-शोर से तैयारी आरंभ कर दी। जुलाई, 1941 ई० में जापानी सरकार ने हिन्द-चीन की विदेशी सरकार को अपने समस्त बंदरगाह और हवाई अड्डे जापान को सुपुर्द करने का आदेश दिया। इसमें यह भी कहा गया कि हिन्द चीन से कोई भी युद्ध सामग्री चीन को न भेजी जाए। हिन्द चीन की सरकार ने जापान का प्रस्ताव बिना किसी विरोध के मान लिया। परिणामस्वरूप फ्रांस के समस्त उपनिवेशों पर जापान का अधिकार हो गया। जापान ने इसके बाद इण्डोनेशिया तथा

Scanned with CamScanner

डच ईस्ट इण्डीज को भी अपने प्रभाव क्षेत्र में कर लिया। इस प्रकार सुदूर-पूर्व तथा दक्षिणी-पूर्व में शक्ति का संतुलन बिगड़ जाने पर इंगलैण्ड और अमेरिका चौकन्ने हो उठे। इंगलैण्ड ने अमेरिका का साथ देने की घोषणा कर दी। अतः अमेरिका ने जापान की गतिविधि रोकने का फैसला कर लिया। तत्काल ही अमेरिका, इंगलैण्ड और हालैण्ड में जापान की विनियोजित पूंजी जब्त कर ली गई। मैक आर्थर के अधीन फिलीपाइन की सेनाओं को अमेरिकी सेनाओं से मिला दिया गया। जापान ने इसके उत्तर में स्याम पर कब्जा कर लिया। इसके बाद जापान ने मलायक हवाई-द्वीप पर आक्रमण करके पर्ल हार्बर के नौ-सैनिक अड्डे पर बमबारी कर दी और उस पर अपना अधिकार कर लिया।

हवाई-द्वीप में स्थित 90% अमेरिकी जल-शक्ति और वायु-शक्ति की हानि हो गयी। अतः बिना प्रतिरोध जापान का अधिकार वेक, गुआम, मिडवे, फिलीपाइन तथा हांगकांग पर हो गया। इसके बाद जापान ने मलाया के समुद्र पर प्रिंस ऑफ वेल्स और रिपल्स दो ब्रिटिश जंगी जहाजों को डुबो दिया। इसके बाद जापान ने सिंगापुर को अपना लक्ष्य बनाया। पहले जापानी सेना थाईलैंड में घुसी। फिर मलाया के दुर्गम जंगलों को पार करती हुई 31 जनवरी, 1942 ई० को सिंगापुर आ गयी। 15 दिन तक लड़ाई हुई, अंत में सिंगापुर का पतन हो गया। 1942 ई० तक इण्डीज के सब द्वीपों पर अपना अधिकार कर लिया। उसी वर्ष न्यूगिनी पर कब्जा कर लिया। 8 मार्च, 1942 को बर्मा की राजधानी रंगून पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार जापान तीन महीने में ही दक्षिण-पूर्वी एशिया में पश्चिमी साम्राज्यवाद का अंत कर दिया। 6 महीने के भीतर जापान का प्रभुत्व एक ओर से भारत की सीमा तथा दूसरी ओर से आस्ट्रेलिया के उत्तरी तट तक हो गया। उसके विस्तार से सारा विश्व स्तब्ध और चकित रह गया।

Scanned with CamScanner

पूर्वी एशिया का नया संगठन :- साम्राज्य विस्तार के साथ-साथ जापान ने नवविजित क्षेत्रों के संगठन की ओर भी ध्यान दिया। एशिया में अपने नवविजित क्षेत्रों को उसने "वृहत्तर पूर्वी एशिया सह-समृद्धि क्षेत्र" नाम दिया। इन तमाम देशों में स्वतंत्र सरकारों की स्थापना कर दी गयी। परंतु व्यवहारिक दृष्टि से इन्हें जापान ने अपने प्रभाव में रखा। इन देशों के साथ संधियों के द्वारा उसने इन देशों में विशेषाधिकार प्राप्त किया। हर देश में स्थानीय भाषा के साथ-साथ जापानी भाषा अनिवार्य कर दी गयी। तमाम देशों एक ही ढंग का सामाजिक विधान लागू किया गया। प्राचीन नैतिकता को नये परिवेश में प्रोत्साहन दिया गया। 1942 ई० में टोक्यो में 'वृहत्तर पूर्वी एशिया मंत्रालय' की स्थापना की गयी। 1943 ई० में एक 'वृहत्तर पूर्वी एशिया सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इसमें सभी देशों के अधिकृत राज्याध्यक्ष शामिल हुए। इस आशय की घोषणा की गयी कि पूर्वी एशिया पर पश्चिम का आधिपत्य समाप्त होना चाहिए। कहा गया कि इस क्षेत्र में केवल वहां के निवासियों का ही शासन होगा और इन तमाम देशों के लोगों को आपसी रक्षा, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक प्रगति के लिए सहयोग करना चाहिए। निः संदेह जापानी साम्राज्यवाद ने एशियाई देशों के लिए अनेक कठिनाइयां पैदा की और काफी नुकसान भी पहुंचाया, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि एशिया में राष्ट्रीयता की भावना को सबल बनाने में जापानी साम्राज्यवाद कई तरह से सहायक सिद्ध हुआ।

युद्ध की दिशा-परिवर्तन तथा जापान का आत्मसमर्पण :- जापान की प्रगति को देखकर अंतर्राष्ट्रीय एकता की स्थापना हुई। अमेरिका अपनी नींद से उठ खड़ा हुआ। युद्ध ने पलटा खाया। यहां से जापान की पराजय शुरू हो गयी। कोरल सागर तथा मिडवे-द्वीप में जापान को भारी क्षति हुई। तब जापान ने दक्षिणी-पश्चिमी प्रांत के क्षेत्रों से पीछे हटना शुरू कर दिया। उसके हाथों से कई द्विप-द्वीप निकल गए। मित्र राष्ट्रों ने आक्रमक की नीति अपनायी। आस्ट्रेलिया ने

थलसेना का तथा न्यूजीलैंड ने जलसेना के मुख्य कार्यालय बनाये गये। वहां से उन्होंने जापान पर आक्रमण करना शुरु कर दिया।

1943 ई० में चीन की स्थिति पलट गई। अमेरिकी जहाजों द्वारा वहां युद्ध-सामग्री पहुंचने लगी। चीन और अमेरिका में समझौता हो गया। चीन को समानता का दर्जा दे दिया गया और उनको युद्ध के लिए और अधिक प्रेरित कर दिया गया।

अमेरिका के जलपोतों ने एक द्वीप के बाद दूसरा द्वीप लेना शुरु कर दिया। 1944 ई० फिलीपीन की लड़ाई लड़ी गयी। लीट नामक स्थान पर जापान को जल तथा वायुसेना को बड़ी क्षति पहुंची। इसके बाद जापान के मुख्य भूमि पर बमबारी शुरु कर दी गयी। 1945 ई० में 10 मार्च को टोक्यो नगर में बमबारी करके तहस-नहस कर दिया। रंगून पर भी पुनः मित्र-राष्ट्रों का कब्जा हो गया। रूस भी अमेरिका और इंगलैण्ड की प्रार्थना पर जापान के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गया। अब जापानी मुख्य-भूमि पर घोर बम-वर्षा शुरु हो गयी। जापान की ओर से तटस्थ देशों के जरिए संधि प्रस्ताव आने लगे। मित्र-राष्ट्रों के बिना शर्त जापान से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, किंतु जापान ने इसे नहीं माना। अमेरिका ने जापान से बदला लेने और युद्ध को शीघ्र शांत करने के लिए अणुबम का प्रयोग किया। 6 अगस्त, 1945 ई० को हिरोशिमा नगर तथा 9 अगस्त को नागासाकी पर अणुबम फेंके। इससे तबाही मच गयी। जापान ने घुटने टेक दिये। 30 अगस्त, 1945 ई० को मित्र राष्ट्रों के सर्वोच्च सेनापति मैक आर्थर जापान आ गये और आत्म-समर्पण की पूरी कार्यवाही येडो की खाड़ी में अमेरीकी युद्धपोत पर पूरी हुई।

<u>युद्ध में जापान की पराजय के कारण</u> :— एशिया में जापान का उदय एवं जापानी साम्राज्य का निर्माण एक चमत्कार माना जाता है। 1867 ई० में जापान में इस प्रतिक्रिया का सूत्रपात हुआ। वह उत्तरोत्तर

प्रगति करता गया तथा एक छोटे से द्वीप ने कालक्रम से पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी एशिया में अपने से कई गुना विशाल साम्राज्य कायम कर लिया। इसमें जापान की आंतरिक प्रगति एवं बाह्य परिस्थितियों ने योगदान दिया। 1902 ई० की आंग्ल-जापानी संधि की आधारशिला पर जापान ने इस भव्य साम्राज्य का निर्माण किया तथा रूस, जर्मनी आदि देशों को नीचा दिखाया। परंतु द्वितीय महायुद्ध में भाग्य ने जापान का साथ नहीं दिया। प्रथमतः, जापान ने जर्मनी के साथ गठबंधन किया। परंतु जर्मनी की पराजय हो गयी तथा उसके साथ जापान की पराजय निश्चित हो गयी। दूसरे, जापान ने अमेरिकी उत्पादन-शक्ति का सही अंदाजा नहीं लगाया तथा पर्ल बंदरगाह की दुर्घटना उत्पादन-शक्ति का सही अंदाजा नहीं लगाया दुर्घटना के एक साल के अंदर अमेरिकी व्यवस्था ने अपना चमत्कार दिखाना आरंभ कर दिया। तीसरे, जापानी नेताओं ने जर्मनी की शक्ति का गलत अंदाजा लगाया और रूस में जर्मनी की प्रारंभिक विजयों ने जापान को संयुक्त राज्य अमेरिका के विरुद्ध अंतिम फैसला के लिए सचेष्ट कर दिया। जिसके कारण एशियाई युद्ध भी विश्वयुद्ध का अंग बन गया। इसके अतिरिक्त जापान के अधिकृत क्षेत्र दूर-दूर तक फैले थे तथा उन पर कब्जा रखना असंभव था। जापान में खनिज पदार्थों एवं पैट्रोलों की कमी उसकी मौलिक कमजोरी थी, जिनसे जापान को अंतिम दिनों में काफी संकट उठाना पड़ा। अंत में जापान की परिस्थितियां भी निराशापूर्ण थी। उसका भाग्य जर्मनी से बंधा था। जर्मनी की हार से उसकी हार निश्चित हो गयी। इसके अतिरिक्त अणुबम ने जापान को भयंकर विनाश में डालकर प्रलय ला दिया। अतः वर्षों में संजोयी जापानी साम्राज्य की नींव बालू के रेत की तरह ढह गई और जापान स्वयं मित्र-राष्ट्रों के अधीन आ गया।

<u>युद्ध के परिणाम</u> :- युद्ध ने जापान को जलाकर खाक कर दिया। जापान को इस पराजय के पाश्चात् अपनी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सैनिक पुनर्निर्माण के

Scanned with CamScanner

क्रम में अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ा। युद्ध की ज्वाला ने रूस और जापान की 'वृहत्तर - पूर्वी एशिया - समृद्धि - क्षेत्र' की महत्वाकांक्षा को जलाकर राख कर दिया तो दूसरी ओर इसने एशिया में गोरे साम्राज्यवादियों के प्रभुत्व का नाश किया। सत्य तो यह है कि युद्ध के थपेड़ों से विश्व के उपनिवेशवादी साम्राज्यवाद का महल टूटकर चकनाचूर हो गया। इसके बाद ही एक-एक कर भारत, श्रीलंका, बर्मा, हिन्द-चीन, इंडोनेशिया आदि एशियाई देशों ने विदेशी सत्ता का नाश कर अपनी आजादी प्राप्त कर ली। इस प्रकार जापान ने अप्रत्यक्ष रूप से एशिया के गुलाम देशों की सहायता की। स्वयं जापान का अपना विस्तृत साम्राज्य भी बिखर गया और उसकी सीमाएं सिमटकर 1894 ई० की स्थिति में जा पहुंची। फारमोसा चीन को मिला। कोरिया स्वतंत्र हुआ पर उसके दो टुकड़े हो गये, उत्तरी कोरिया पर सोवियत रूस तथा दक्षिणी पर अमेरिका का प्रभाव कायम हुआ। मैक आर्थर के नेतृत्व में अमेरीका सेना ने जापान पर कब्जा कर वहां तानाशाही सरकार का खात्मा कर दिया और उसके स्थान पर एक गणतंत्रीय राजनीतिक ढांचे का निर्माण किया। कुछ समय के लिए 'उगते सूरज का देश' सैनिकवाद के गहरे काले बादलों से घिर गया। पर जल्द ही बादल छट गये और जापान फिर रौशनी में आ गया।